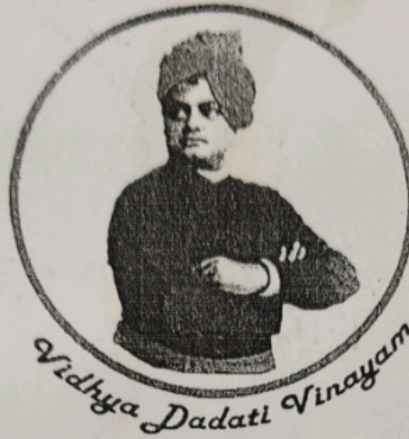


Reshma Barmam

# GOVT. SWAMI VIVEKANAND COLLEGE BODLA

Dist. - Kabirdham (C.G.)



A

Session Year - 2022-23

## Assignment

on

Subject : chemistry

Unit : 5

26/11/22  
Guided By

.....  
.....

Submitted By

Name : Reshma Barmam

Class : B.Sc. II

# INDEX

## Questions

## Assignment (a)

Page  
no-

- (1.) अम्ल क्षार क्या हैं? आहिरनियम की संकल्पना की समझाइएँ ? 1-2
- (2.) ब्रान्सटैन तथा लॉरी के सिद्धांत को लिखिए ? 3-5
- (3.) लक्ष्य - फलट धारणा को समझाइए ? 6-7
- (4.) इलेक्ट्रॉन युग्म दाता ग्राहक तंत्र के आधार पर लुईस धारणा को समझाइए ? 8-10

## Assignment (b)

- (1.) प्रोटीनिक अप्रोटीनिक एवं उभय प्रोटीक विलायक क्या हैं? उदाहरण दीजिए ? 12-
- (2.) निर्जल विलायक क्या हैं? निर्जलविलायक को वर्गीकरण कीजिए तथा विशेषताएँ लिखिए ? 12-14
- (3.) निर्जल विलायक क्या होता है एवं अमोनिया में होने वाले विभिन्न रासायनिक अभिक्रियाओं का वर्णन कीजिए ? 15-17
- (4.) एवं अमोनिया अशुद्धीय योगिता के लिए अच्छा विलायक है उदाहरण द्वारा समझाइए ?

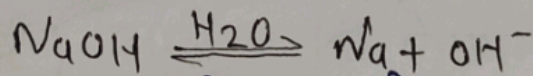
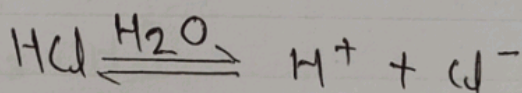
Topic - Acid and Bases

अम्ल  $\rightarrow$  ऐसे पदार्थ जो जल में घुलकर हाइड्रोजन आयन ( $H^+$ ) देते हैं। अम्ल छिल्लाने हैं अम्ल नीले लिटमस पत्र को लाल कर देते हैं तथा ये स्वाद में खट्टे होते हैं अम्लों का pH मान 7.0 से कम होता है।

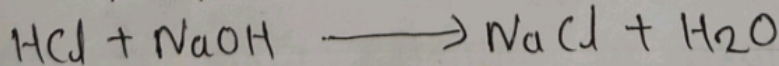
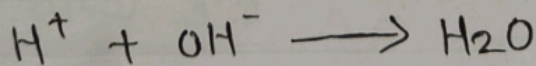
क्षार  $\rightarrow$  ऐसे पदार्थ जिसे जल में घोलने से जल का pH मान लिटमस 7.0 से अधिक हो जाता है। क्षार छिल्लाना हैं क्षार लाल लिटमस पेपर नीला कर देते हैं तथा ये स्वाद में कड़वे होते हैं।

$\Rightarrow$  आर्डीनियस धारणा  $\rightarrow$  इस धारणा के अनुसार, अम्लों में हाइड्रोजन परमाणु के पदार्थ हैं जो जल में विलेय होकर हाइड्रोजन आयन ( $H^+$ ) देते हैं तथा क्षारों के पदार्थ हैं जो जल में विलेय होकर हाइड्रॉक्साइड ( $OH^-$ ) आयन छिल्लाने हैं।

उदाहरण :- HCl एक अम्ल तथा NaOH एक क्षारक है।



अम्ल तथा क्षारक परस्पर क्रिया करके लवण तथा जल बनाने हैं। इसे उदासीनीकरण की क्रिया कहते हैं तथा इस क्रिया में उत्सर्जित ऊष्मा को उदासीनीकरण की ऊष्मा कहते हैं।



उपयोगिता  $\rightarrow$  i) इस धारणा से उदासीनीकरण की ऊष्मा ज्ञान की जा सकती है।  
ii) अम्लों के उदात्तप्रेरकीय गुणों को समझाया जा सकता है।

अम्ल तथा क्षारकी यह धारणा केवल जलीय विलयन पर ही लागू होती है अन्य विलायकों पर या विलायकों की अनुपस्थिति पर लागू नहीं होती है।  
उदाहरणार्थ -  $NH_4NO_3$  जब अमोनिया में विलीय होकर अम्लीय गुण प्रदर्शित करता है किन्तु  $H^+$  आयन नहीं

देता है।  
 (ii) इस धारणा से  $AlCl_3$ ,  $FeCl_3$  जैसे कुछ लवणों के जलीय विलयन में अम्लीय गुण की व्याख्या नहीं की जा सकती है।

(iii) इस सिद्धान्त से उन पदार्थों के क्षारीय गुणों की नहीं व समझा जा सकता है जो  $OH^-$  आयन नहीं बनाते हैं।

ऑक्साइड - लॉरी सिद्धान्त

अनुसार " वे हाइड्रोजन जो किसी अन्य पदार्थ अम्ल (Acid) कहलाने अणुगणन जो किसी धर सञ्चने हैं . क्षार अम्ल प्रोटॉन दाता (Do होता है।

इस परिभाषा वाक्यित किये जाने

ऑक्साइड अम्ल

अणुण (Molecular) जैसे -  $HCl \rightleftharpoons H^+$

कैटायनिक (Cationic) जैसे -  $[Al(H_2O)_6]^{3+} + [Al(H_2O)_5]$

ऐनायनिक (Anionic) जैसे -  $HCO_3^- \rightleftharpoons H^+$

संयुग्मित अम्ल - क्षारक

उच्चले लीय भाग में उत्पन्न हो जाती है। करने लगता है तथा अम्ल  $HCl$

# PROJECT

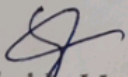
on

नाम - क्षीमरी निपाद

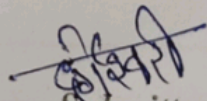
कक्षा - एम कॉम प्रथम सेमेस्टर

विषय - भाषाशास्त्र

Year.. २०२३-२४.....

  
Guided by

योगेश धुव

  
Submitted by

क्षीमरी निपाद

11) दानियों की पूर्ति और उन्हें आगे ले जाने  
रूपरखा

1) दानियों की पूर्ति

2) दानियों की पूर्ति से संबंधित प्रावधान

1) मकान सम्पत्ति से दानि ।

2) सामान्य व्यापार की दानि ।

3) सड़के के व्यापार से दानि की पूर्ति

4) पूर्ति दानि की पूर्ति

5) घुड़दौड़ के घोड़ों के स्वामित्व तथा रख रखाव  
की क्रिया से होने वाली दानि की पूर्ति

6) साक्षेदारी फर्म की दानि

12) दानियों की पूर्ति के लिए आगे ले जाने के लिए  
प्रावधान

1) पूर्ण दानि

2) फर्म के संगठन में परिवर्तन

3) व्यापार अथवा पेशे का स्वामित्व नष्ट होने पर

4) दानियाँ

दानियों की पूर्ति तथा आगे ले जाने का नियम

5) दानियों की पूर्ति एवं आगे ले जाने से सम्बंधित  
क्रियात्मक उदाहरण ।

① हानियों की पूर्ति से भाग्य -

जब ऊरदाता को किसी शीर्षक से लाभ तथा किसी शीर्षक से हानि हुई हो तो जैसी हानियों की पूर्ति को विभिन्न शीर्षकों के अंतर्गत हानियों की पूर्ति उद्यते है।

② हानियों की पूर्ति से संबंधित प्रावधान -

गतवर्ष में किसी स्रोत या शीर्षक से हुई हानि होती है तो उसकी पूर्ति निम्न प्रावधानों के अधीन की जा सकती है:-

① मकान सम्पत्ति से हानि :-

किराये पर दिये गये मकान सम्पत्ति की हानि या स्वयं के आवास हेतु मकान के कृण के व्याज की कटौती के कारण उत्पत्ति हानि पूर्ति सर्वप्रथम अन्य मकान सम्पत्तियों की भाय की जायेगी।

② सामान्य व्यापार की हानि -

सामान्य व्यापार से भाग्य सदे के व्यापार का छोडकर शेष सभी प्रकार के

व्यापारों से है। सामान्य व्यापार की दानि की पूर्ति किसी अन्य व्यापार या पेशे की आय से अथवा मकान संपत्ति की आय से अथवा पूँजी लाभों से अथवा अन्य साधनों की आय से पूरी की जा सकती है।

3) सट्टे के व्यापार से दानि की पूर्ति -

एक सट्टे के व्यापार की दानि की पूर्ति दूसरे सट्टे के व्यापार के लाभ से पूरी की जा सकती है। लेकिन सट्टे के व्यापार की दानि किसी अन्य शीर्षक से या व्यापार के लाभ से पूरी नहीं की जा सकती है।

4) पूँजी दानि की पूर्ति -

पूँजी दानि की पूर्ति अन्य पूँजी लाभ चाहे अल्पकालीन हो या दीर्घकालीन से की जाएगी यदि फिर भी पूरी पूर्ति न हो तो शेष राशि की पूर्ति अन्य शीर्षक की आय से नहीं की जा सकती है।

5) छुड़दौड़ के घातों के समाहित तथा रखरखाव की क्रिया से होने वाली दानि की पूर्ति -



घुड़पॉड के घोड़ों के स्वामित्व तथा रख-रखाव की क्रिया से होने वाली हानि की पूर्ति केवल घोड़ों के स्वामित्व तथा रख-रखाव की क्रिया से होने वाली आय से ही की जा सकती है।

### ७ साझेदारी कर्म की हानि -

साझेदारी कर्म की अपनी हानि की पूर्ति स्वयं ही कर सकती है लेकिन साझेदार अपने हिस्से की हानि अपने निजी व्यक्तिगत आय से पूरी नहीं कर सकते हैं क्योंकि कर्म से साझेदारों को लाभ में प्राप्त होने वाला हिस्सा उनकी व्यक्तिगत आय में शामिल नहीं किया जाता है।

### हानियों को भागे ले जाना

हानियों को भागे ले जाने से आशय यह है कि जब गतवर्ष में हुई हानि की पूर्ति करवाता की अन्य किसी आय से पूरी न हो सके वो ऐसी हानि को भागे ले जाकर भविष्य में होने वाली विभिन्न शीर्षकों की आय से पूरी करने हेतु भागे ले जाने से है।